

श्यामकेलि

---o---

कायस्थ भटनागर श्रीलालागोविन्दसहाय वल्द
लालागणपतिराय सिकन्दराबाद ज़िलअ
बुलन्दशहर निवासि कृत

जिसमें

सच्चिदानन्द आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र जी और
सर्व सुखखानी श्रीराधिकारानीजी की केलि
अत्यन्त ललित कवित्तों और भजनों में
वर्णन कीगई है ॥

---o---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर सी,आई,ई के छापेख़ाने में छपी
मार्च सन् १८८९ ई०

पहिलीबार ६००

श्रीगणेशायनमः ॥

श्यामकेलि ॥

—※—

दोहा ॥

जयगणापति शारद जयति मंगलीश वागीश ॥
श्रीगुरुचरण सरोजभज नवउँ हरिजननशीश १
कृष्णभजूं कहूं कृष्णगुण कृष्णध्यान सोइज्ञान ॥
कृष्णश्रवणप्रिय कृष्णमन कृष्णकृष्णप्रियगान २

स० मथुरा हरि प्रकटे पुनि गोकुल नन्द के आनँद कन्द सुहाये। सकल दिवूकस भयउ ब्रजूकस महतसो ब्रज बस विदसन पाये ॥ महर यशोमति सखन सुख दहरि सखियन सँग रसरहस रुचाये। अलखअमानुष मानुष बपुधर गोबिँद गोश्रन प्रेडत भाये १ ॥

प्रियाबचन सखियनप्रति सोरठा ॥

रसिक शिरोमणिश्यामप्रेमप्रमतिगतविकृतिछवि ॥
बिलसतजहँब्रजबाम प्राणिनिरखि प्रियबिहँसिकहो १

स० देखो श्यामकी यह छवि एरीसखी दृग मैन दे नैनके बैनन बोलैं। पेचखसे शिरपेच लसैं कसी भैंट कसे न कसीमिस खोलैं ॥ रसराचे नैन लजीलीसो चितवन नेहको तेहादुरैं दृगओलैं। आपो सवांरत पर न बनतघद कम्पत घूमत झूमत डोलैं ॥ डारत बोली निहारत औरँपुकारत औरन औरके भोलैं। कोइहँसे कोइ श्याम हँसावत श्याम सखिनमन बोलन तोलैं ॥

गुंजन पुंजन कुंजन पंकज गुंजतमधु श्रीयमुनाकूलैं। प्रेमको भाव जनावत गोविँदप्रयामकूं पावैं जो प्यामसी होलैं २॥

श्यामबचन प्रियाप्रति॥

प्याम हँसेही यानेहा दुरें कहाबानिसखी नईकौन पै सीखी। आपनि बात सुनायकै औरपै डारत हौ मानो भोरेसे जीकी॥ तुमहिं चतुर तुम सुघर शिरोमणि आपको नीको निहारक नीकी। सौसौ करो न छिपै जोवसेचित भाये फँसामन हांसीते फीकी॥ भोरेसे बैन हसोरीसी गोरी ठगोरेसेनैन बिलोकन नीकी। बातन घाते सुहातीसी बातन प्रीतिसनी भनें बानी महीकी॥ सांची कहूं न कहै कौनबावरीमानो बुरी भाखो मेरी कहीकी। जैसी कहे पुनि तैसी सुनो चहै लागी लगनि मन गोविँदहीकी ३॥

प्रियाबचन श्यामप्रति॥

कैसे फिरो मनफूलेसे मोहन कोई मिली प्यारी काककु पाओ। रोकत हांसी बिलोकत कुंजन टोकत औरन को मिस लाओ॥ कहबो चहत पर कहत बनत नाहीं कैसी बनीकहो यहां लौंतो आओ। बानि सदाकी मैं जानति गोबिंद कैसीहू बात बनाय छिपाओ ४॥

श्यामबचन प्रियाप्रति॥

आई इतैहो कितैकूं चलीअली तेरीगली कहां त कितही को। घाटनपानीकोबाट इतै कित भली फिरै

गति मानो ठगीकी ॥ ठाढ़ीभई चली ठाढ़ीसम्हारति श्यामचितै गति आपने जीकी। रोके बनैनबनै मन रोकेहू जानति रीतिन प्रीति नई की ॥ सोहै बदनश्रम कनकी मनोछबि चन्द्रतेअमृतबिंद सिखीकी ॥ केशन कुसुमलसे सोखसत आली भूलीसुरतिखुली बेनीगुही की। प्रेमदुरै मन भोरोहमैं गिन देत सिखावन आन सखी की ॥ तू जो कहैन कहावै तेरोमन जानै गोविंदही तेरी चहीकी ५ ॥

राधा बचन श्यामप्रति ॥

गुन मतोतेरो जानै मेरोहीऔ काऊते आसा लभा-सादेकोई। गोपिन गुनमें जानूं सबै नवयौवनी लोभनी ओरही होई ॥ तोकूं ललाललचाय लुभायकैबातबनाय दुरै गई सोई। कोनके लारहिरो फिरो गोविंदपाई गई किन खोई सोखोई ६ ॥

श्याम बचन राधाप्रति ॥

ठाढ़ी कहा बतरावतहो इतरात कहांलों छिपे चतु-राई। लाज विवेक मर्य्यादकी टेकहू आज तोएकहू तोमें नपाई ॥ कोई कहांलों कहैन सहै तेरी जैसी कही तैसी तोमनभाई। मैंजो कही सो कही निजप्रीति की मोकूं बिनातेरे कौन सुहाई ॥ तूही चहैन चहैप्यारी मोमन तोमें बसो तूही जीमें समाई। धाऊं जहां तेरो ध्यान सबै तजि तोसूं निरन्तर प्रीति लगाई ॥ मेरोतो भावना जानैं सबै सखी मैं तो सदा राधेराधेही गाई। प्रेमतेगोविंद हेतहवैकोन तोकूं प्रियावृषभानदुहाई ७ ॥

ललिता आगमन ॥

श्याम बचन सुनिश्यामा ठगी गई आन सखिन तन लज्जित निहारी। आपने मंत्रकीललिताख्खीसो विसाखा सहित निर्जनिकट पुकारी॥ आवतही गई आपेते आई पै श्याम चितै पुनि सुरति बिसारी। नीरद नील सकान्त बपूनव नीरज नैनसो नेह अपारी॥ पीतवसन तनदामिनिद्युति घन कुंडल छलक अलक तट न्यारी। गुंज लसे तन भूषरा कुसुमन सुबरण गगन मनो घन भारी॥ मंद हसन मन बसन बिलोकन भृकुटि कुटिल अधरन छवि चारी। होमें चितौंचित चकृत निहारत नैनन गोबिंद रसिक बिहारी ८॥

ललिता बचन श्यामप्रति ॥

चाहत राधापै जैबो सखी परकैसे तजै मनश्यामकूं मानै। आयुस बीचमेंचुम्बक दोजो इतैकूं खिंचैतोउतैकूं दुरानै॥ दुविध ज्वार्ताज दुन्दप्रसोमन त्वाजिमिदोउ दिशा परवश भ्रमानै। बिषम गवन जल पवन बहन बश तरनी सकै नचलै न थिरानै॥ श्यामहू ललिताको रूप निहारत मोहे मनै पर प्रकट हंसानै। भूली किधें मतिकितहू बिसरि आई मनहू न संग लई हमहूगवानै॥ श्यामते गाई दुहाई बबाकी न भावै हमैं तेरे बचनसियानै। उनते कहो जोसुनैं सहैंरस लहैं जैसो कहै जोसो चाहे कहानै॥ हमन कहैंनसुनैं कछुकाहू की काहूको सांवल गौरन जानै। तुमहीं नविन गुरा सुनियत गोबिंदहमहं सो यह गुरा आजलखानै ९॥

श्याम बचन ललिताप्रति ॥

कहो श्याम सखी तुम जानो कहा बिनज्ञानके मान हरै मतकैसी । स्वप्नमें रंगमिलै बिसरै श्रीमानीको मान करोजो सो ऐसी ॥ नारिकेलमें दुग्ध सु तंत्र भरे तुच पुष्ट अभेद रहेहोसो जैसी । गजमुक्त कपित्त को सत्तन सें वहर आकृती आवृती होजोसो तैसी ॥ बिन पदपन्थ बिनागिने गुनछिन सम्पति आगमा पाई सुतैसी । तुमरे धनो धनहै तो भलै दियो मानपै षोड़शा बरसन वैसी ॥ तुमसी भुजिठ्यापरेख्या घनी करें नन्दके तुमसी सहस गुबरैसी । खिजो अपने गोबिन्द भजोतो भलेपर प्रियाकी प्रिये सोहमारी प्रियैसी १० ॥

बिसाखा बचन श्यामप्रति ॥

गाई बिसाखा सुनाय सुहाईसी आपकूं श्यामजू ऐसोनसोहै । बड़े बापके पुत्र कहाये भले नँदलालजू नाम सुहायो भलोहै ॥ नंदजू साधु यशोमति भोरीठगो री नबिन गुणातुमहीं लियोहै । सखी आपही यशुमति कानिकरैं करै मान तो ज्ञातिमें कौनबड़ोहै ॥ धेनु महा धन गोपनको सोतिहारेकहा जोघनोसो भयोहै । नन्द जू वृद्ध प्रधान महानको शील सो ज्ञानते मानबड़ोहै ॥ माखन चोरी हसोरी लई मुख जोरी बुरोगुणा तोमें पड़ोहै । मातकी सांटी उलूखल दामकूं भूले गोबिन्द की उन अभयोहै ११ ॥

कृष्ण बचन बिसाखा प्रति ॥

तोसी बिसाखाकीसाखकहा सखी साखदे शाखापै

शाखा जमावै। हमहींते सीख सुनाय कहै सखीसीखे सिखाये नसीख सिखावै॥ अपनेही मनते बनै सोकहै कहूं आन बनेतो कहा बनि आवै। गान करैं हमजन कन को करैं मुनि जन कान कहा तू जनावै॥ धनकी कहै तो धनद मोते धन चाहै निरधन धन मेरोनाम कहावै। प्रेमते मोकूं भजै सोठगैमोय मैंही घृनी मोत्ते कौन ठगावै॥ सखियन प्रेमबिवश ब्रज बश भयो श्री पुर सुख ब्रजकेलि भुलावै। प्रियात्ते कहौ तजिमान मिलो प्यारी राधे गोविन्दही त्रिभुवन गावै १२॥

ललिता बचन राधा प्रति॥

ललिता ललित गति बिगति चलितमन चलत चितैछबि राधेपै धाई। सुरगुर बिलशीसो ताराचली मानो चन्द्रमा दीप्तिबदन तनआई॥ बासव प्रेडी चली मानो उर्वशी आई जहां शची सुरुचि सुहाई। बिथित्त मना बिमना मनहीं मन राधाइत्तै लज्यानी सी पाई॥ एकही श्यामते नेहा लगी दुरैएकते एक जनायढिठाई। प्रिया तेकहो वृषभान की कानहू तुमहूं तजोन गहो ठकुराई॥ तुम्हरे सदा नवनिद्धि बसे श्रीऋद्धि सुधनधन धेनु सुहाई। ग्वाल गोविन्द से द्वारे खड़े वृषभानु के मांगत धेनु चराई १३॥

ललिता पुनर्वचन प्रिया प्रति॥

बचन प्रपंचन बंची प्रिया नहीं श्यामके भायेकछू दारतेरी। बातन प्रीति जनाय कहै गिनै सखियन अपनो सुचारीसी चेरी॥ दासी कहो तो सबैकही

बावरी तूरही कौन कहा चलै मेरी । मुक्तनमाल सुरन सनभूषणा गुंज कुसुम कली अधिक चहेरी ॥ चन्द्रिका रतनजड़ी तुम्हरी उन मोरके पांख लै सीसधरेरी । तुम्हरे बिचित्र बरन बसननपर काछनी कांवरी चहत बड़ेरी ॥ माखन घरन हरन दधि गलियन अवन सहैं सहेजबलौं सहेरी । ऐसे गोबिँदसे प्रीति कहा जामें लाजमर्यादन कानिहै सरी १४ ॥

राधा बचन ललिता प्रति ॥

श्यामकी ललिता कहै सो कहैं सब हमन अपुन मनहूं यही जानी । यौबनमान गुमान प्रमतनहींमानत औरन अपुन समानी ॥ अनल भरन जल भरन दनुज भैते अभयेते हमनिज दासी प्रमानी । चीरहरे तो कपान करो सखी हिमित अमत अति लजित खिजानी ॥ संमित्रयंत्र मनो मुरली सुनि श्रवण सोतन मन लाज बिकानी । बनिता बनन रनिवास प्रवेशन चोर और जार सिखामनमानी ॥ लम्पट जारको सार कहा मनमानी करै कहै पर प्रियबानी । अबन गोबिन्दसों प्रीति करैं न प्रवेशदेंहारत्तेवेजनपानी १५ ॥

बिसाखा बचन राधाप्रति ॥

कछुक सकुच बिहँसी मनहींमन प्रियाते बिसाखा कहे सखीएरी । औगुणी श्यामभये सो भये सखी तुमहीं महदगुण कैसेतजेरी ॥ प्रिया गोलोक विहारनी मोहन तुम प्रिय कर ब्रज रास रचेरी । रासमें संग विलासतेरंगमें लालनलाल गुलाल मलेरी ॥ कोकिला

बैनी सुगानकरैं उन बांसुरी धुनि मन बमान करे री । प्रिया नितमोहन प्रीति बिवशरहो कौउन बचन अर्बाकिन सिखरी ॥ त्रिभुवन गोबिन्द बिवश सो प्रियावश प्रियाभई मान बिवश न सोहैरी १६ ॥

राधा बचन बिसाखाप्रति ॥

कोन बिसाखा सुने न हरीगुण तुमना चलनचिन पुराचिन चीने ॥ रचिश्री नग्र छले श्रीनारद बनिश्री बामन बलि छलि लीने ॥ वृन्दा छली अनुसुय्या छलन चाही उन हरिहर बिधिहू छलिलीने । मोहनी रूप धरे हरीपुनि दानव हरहक मोहनकीने ॥ प्रिया तन त्रिया बनि त्रियन में प्रिया बने बसन बचन छति रुचिर प्रबीने । नर नारी बनि हरीनारी नरन छलो हमैंऊ छलेना सोहमर आधीने ॥ चाहै सो रूप धरैं करैं चाहै सो करत चक्रत छति चरित नवीने । जेते गोबिन्द भजे सो लहेफल दूरही ते करजोरू हमीने १७ ॥

सखियनपरस्पर संवाद ॥

सखी हरिपाये मन्दिर माय ॥ अपुन अपुनीसी निरखि मणि खम्भनिजतन छाय । दूसरीभ्रमुजानि माखन देत हम तुम खाय ॥ कहे न कहीं निज छत परस्पर युगल मित्र सुहाय । निरखि सखी हमलखि सकुचे तजि भाजे गोबिन्द ठाय १८ ॥

इतरगोपी बचन ॥

माखन हरत परघर जाय ॥ गोपी आवत देख

मोहन भवनकोन दुराय । जोहो सन्मुख तो भजै न भजै तो देत हँसाय ॥ करगहै कोइ तौ झटक मुख मोरतन छिनखाय । कहूं भजतगोविन्द भाजत गोपी गति नहीं पाय १९ ॥

इतरगोपी बचन ॥

सखी हरि चरित निरखि सुख पावत ॥ एकदिन आन सखीगहै मोहन माखन मन्दिर चुरावत । यहांकै से आयो कहोकोई बावरी घरबिन जिन तजि धावत ॥ पटकि न खोले कहो हम हितकर बानर मोर भजावत । छीको हलो कैसे मूषक नाखो गोबिन्द कहति हँसावत २० ॥

इतरगोपी बचन ॥

भयो नव माखन चोर मुरारी ॥ सूनो मन्दिर द्वार पट लागे सोहत ऊंची अटारी । ठाढेकरे लड़िकन पर लड़िका काधैन गैल निकारी ॥ लै दधि माखनखाय खवायो सुनि सखी भवन पधारी । गोविन्द सकुच भाजि दधि मुख भर सखी मुख नैननमारी २१ ॥

पुनरगोपी बचन ॥

माखन हरत करत चतुराई ॥ कहो निज मन्दिर निरखि सखि ममघर तू क्यों आयो कन्हाई । कहो हूं तोइ पुकारन आयो यशुमति मात बुलाई ॥ मांटु खुलो कैसे कापन उघारो कर कैसे डारो पपीलक पाई । दधिमुख कैसेलगो करपरसो गोबिंद गोपी हँसाई २२ ॥

पुनर गोपी बचन ॥

मोहन करत सखिन प्रति खोरी । एक सखी दधि चोरत मोहन लेचली यशुमतिपोरी ॥ सखी सुत सैनन बोल दियो कर सखी करकीन ठगोरी । घूंघटते हरी करन पड़ो लखि सखी सुत करचली झगड़त वोरी ॥ गोविंदआज गहो दधि चोरति निरखि महर हँसि करत ठठोरी २३ ॥

इतर गोपी बचन ॥

मोहन माखन हरत खिझावै । बातन घात लखे लखि इत उत माखन लै भजि जावै ॥ ततछिन खाय पकड़नसकेसखी पकड़त कपन खवावै । छीकेमथानी निरखि मुरली कर छेदत दधि मुख लावै ॥ खीझ दै गारी सखी हँसि गोविन्द तारी दै रीझत वोरी कहावै २४ ॥

इतर गोपी बचन ॥

सखी हरि निरखि बिहारन मोहै । गारी गिनै न मानै दधि चोर न मन हरि दर्शन लोहै ॥ काज तजै घर साज बिसारै दधि मिस गलियन जोहै । जोड़ धरै दधि माखन हित करि कब हरि चोरत सोहै ॥ सखियन प्रेम विवश नित गोबिँद घरघर गोधन दोहै २५॥

इतर गोपीबचन ॥

मोहत हरि मुखबेनुधरे । मेघबरनतन अधर अरुन घन कुण्डल करन खरे ॥ नीरद नील दुती शुचि इत उत बरत बरन बदरे । मकर उमिन कवि अरुन किरन

रवि बंसी मनो नभ धनुष परे॥ कोयल कोकिल बानिन गोविंद मुरली धुनिन मन मुनिन हरे २६॥

इतर गोपी बचन॥

कहूं बाजत बेनु मधुर धुनरी। अनिल चलित ना हलत जल अचलित सकल चराचर तू सुनरी॥ बाजत नभ सुरनाद उतैइत मुरली मनोहर कुनकुनरी। पैंजनी धुनि मृदगान पडतधुनि निरतत गोपी नविन गुनरी॥ चलत अचल चल अचलित मोहत मुरली गोविन्दमन श्राय सुनरी २७॥

इतरगोपी बचन॥

सखी मुरली मधुर धुन फेर बजी॥ टेक॥ महिचर जलचर नभचर मोहत यमुन अपुन गति गमन तजी॥ श्याम सुहावन करधर मुरली सुधर मृदु अधर सजी॥ सखियन लाज हरी मिल गोविंद सुख लग बोलनो सो न लजी २८॥

सखीबचन॥

गावत गोपी गोपाल गुना॥ टेक॥ भोरी सो मुख रसबरषत नैनन सैनन बैन सुघड ललना। रुचिर बदन मन बसन हसन छबि दमन दमक उडुगन गगना॥ मोय चितैचित चोरगयो कित मतिबिसरी भई विगत मना। गोविन्द बनबन डोलूं अकेली सो हेली तजो हम घर अंगना २९॥

इतर गोपी बचन॥

श्याम के मैं कौन कौन गुण गाऊं॥ टेक॥ रूप

अतोल अमोलक डोलन बोलन पै बलि जाऊं। नासा कीर सु भासा शुक पिक दृग छबि मृगन लजाऊं॥ चन्द्र बदन सुख सदन सदन छबि हरि वपु सम नहीं पाऊं। शोभा सागर रूप उजागर नित्त गोविन्दछबि धाऊं३०॥

इतर गोपी बचन ॥

श्याम गुण गावत गोपी हंसाई॥ टेक ॥ हूंदधिले घरसे निकसी जब श्याम कहूं लखि पाई। औचक झटपट घूंघट झटको दधिमटकी छलकाई॥ सो दधि बिन्दु लसे हरि मुखपर नभतारन छबि छाई। बिहँसि गोविन्द मुखमोर भजोपुनि सोछबिहियेमेंसमाई ३१॥

सखी बचन ॥

सखी हरिछबि लीनभुलावे॥ टेक ॥ कबहूं ललित छबि लालनकी लखि आनँद उर न समावे। हरीहरी भजत हरी हर मुख पर मोहनही मन भावे॥ कबहूं पुकारकहै कहां मोहन लोचन जलभर लावे। मुखहिमें भोई फिरै मति खोईसी गोविन्द गोविन्द गावे ३२॥

सखीबचन ॥

सुनेरी मैंने श्याम सुहावन बोल॥ टेक ॥ ग्वालन संग तजो माय चितवत आयो इतै उत डोल। बिहँसि कहो मुखदर्शन दै टुक निज घूंघट पटखोल॥ लज्जित चलत मतमोर बिगतभई तनकम्पति अनलोल। बिथल अकेली भजी तजि गोविँद तू कित करत ठठोल ३३॥

सखीबचन॥

कहत सखी सं सखीसुन सरी॥ टेक॥ मैं यमुना जल

भरनचलीमग ग्वालन संग मोय सामल घेरी । गागर डगरपटक पट झटको मैं झटमुरली झटक मगाहेरी ॥ दूजीसखी लै भजी कहूं बांसुरी मोहीं ते श्याम निपट ग्रटकेरी । पुनिहूं गोबिँद संग भाजी सखी तन जोमैं दुरीसो गोलिन भटकेरी ३४ ॥

दूसरी सखीबचन ॥

आई सखी एक श्याम पुकारत ॥ टेक ॥ हेनन्द-लाल गुपाल कहांतुम वेगचलो प्यारी बाट निहारत। भोरही नेक दरश दे दुरेकित काहेको काहू के मन की बिचारत ॥ राधा न माधो रटे बिन मानत जानत हरि परनहीं पन पारत । गोविन्द बेगि प्रिया चल मिलिये सो बिरहानलते वृथा तन जारत ३५ ॥

ललिता बचन बिसाखा प्रति श्यामा नवरस बिहार ॥

बिलसत हरिते बसत गोलोक में जोसो प्रिया वृष भान दुलारी । श्याम के संग सदा रसरास में नव रस रास बिलास बिहारी ॥ मरकत रतन सुरन मणि भू-षण सु बसन करनित नवनिश्रृंगारी । हासमें बांसुरी औचक चोर के भोरीसी खोज खिझाये मुरारी ॥ श्याम दुरेतो फिरीभ्रमरीभई करनाग्रसी जो वृहानल जारी । सद्रताप्रीतिके विघ्न पैबीरता श्यामपै निशिमें बिपित चलधारी ॥ कबहूं किगुरुजन भयते डरीकरी कबहूं गिलानी हया पुनिटारी । बंच गोबिँद बिधि बंचक ग्रहत शान्त बसे हरिहिय प्रिया प्यारी ३६ ॥

कृष्ण नवरस बिहार ॥

प्रिया को शिंगारी हरी निज प्रिय कर प्रिया प्रियकर हरी अपुन शिंगारे। हासमें दान लियो दधि को हरी प्रिया तन छद्म त्रिया बनधारे॥ भयजोकरी तो प्रिया ते करी निज पर त्रिया रुचि प्रिया ज्ञात बिचारे। प्रियाकरो मानतो दीनमनोहरी करनाबचन मन द्रवन उचारे॥ रुद्रता घोर घनन जलटारनबीरता करगिरिभार सँभारे॥ गोपन ग्रास बीभत्सलहे मुख सखिन प्रचरजा प्रचार प्रचारे॥ प्रिया निजबंचक बंची सोअद्भुत मुखहि में त्रिभुवन जननि निहारे॥ प्रिया हरि चित में बसत सोप्रिया चित बसत सो गोविन्द शान्त प्रकारे ३७॥

ललिता बचन बिसाखाप्रति॥

एरी बिसाखा हरिनभलो॥गैल गली सखीपुंजनपनि-घटकबहूं न सूधो चलो। छेड़ै खिझावै रिझाय मना-वतरुचिर बचन चपलो॥गाहक रसको भ्रमत नित इत उत भौंरन जाय छलो। सामरो तन जैसो कारो लखौ मन कपटिन में अगलो॥ कारे बुरे सो अलीरस लम्पट लिपटो जो कमल खिलो। कारी घटा निशि कारी कोयल धुनि बिरहिन गात जलो॥ कारो प्रपंचीहियो सो दयाबिन स्वारथ लीन डुलो। गोविन्द श्याम सबै विधि कारो न तन मन बचन उजलो ३८॥

बिसाखा बचन ललिता प्रति॥

प्यारीहो कारे सब ना बुरे॥टेक॥ कस्तूरी कारेजग

नीको कारे प्रिय बदरे । कारे केश युवा सुख बोधत कारेकुसुमस्वरे ॥ कारेकमल श्याम छवि दरशत कारे भंभुगरे । कारे मोर पंख मुख चंदवा सो हरि शीश धरे॥ श्याम तमाल नील मणि सुन्दर सुन्दर गंज शिरे। गोविन्द श्यामशिरोमणि सुन्दर जिनजगतापहरे३९॥

प्रिया बचन श्याम तस्करता ॥

वृन्दा का ब्रत हरो हरि आपही बल हू के अपुन प्रभावछुपाये॥आपनोरूपदुरैवनेमोहनीदनुजनमतिहरी अमृतदुराये॥श्रमकागभुशुंडगरुड़को हरो हरोगिरिजा जनकजाकोरूपबनाये। यमदग्नितनयतनतेजहरोपुनि ताने धनुरगतबेग नशाये॥ ऋषि यज्ञमें राक्षस भीति हरी हरी केकयी मतिसिया हरन कराये॥ हरे देवकीश्रानकदुन्दुभीबंदिसो नन्द केश्राये़ादुरायपठाये॥ कन्दुक वेणु निशान सखन सखी माखन भूषण बसन चुराये॥ मान अपमान हरे दनु देवन पुनि कंद्रप को दर्प दुराये॥ जन पापनपुंज लखो सो हरो भव भीर हरैया सदासे कहाये। अबहूं गोविन्द रसिक वर छबिधर सखियन चितविते हरि वेकूं आये ४० ॥

श्याम गवन सखान संग ॥

श्याम सबै सुन सैनन बैनन बिहंसि चहो कछु बचन उचारैं। ग्वाल सँघाती वयस महा वेगते आये पुकारत मात पुकारैं ॥ बांहगहे कोइ खैंचैबसनकोइ रहसपकड़ तन शलचनमारैंदूरते आयसुनाय कहै कोइ

संगति दिठांकि चलत मुख मोर निहारै । कान लगे सखी बानी सुहावन बिन मन ग्वालन संग पगधारै ॥ ग्वाल कहे यह न सोहत लरिकन अबहीं सखिन संग चहत बिहारै । मायते जाय कहैं सब गोबिंद हम हैं तो इन तेरी बान न टारै ४१ ॥

श्याम प्रदर्शन यशोदा प्रेम वर्णन ॥

मात इतै हरि बाट बिलोकत दूरते आये निरखिहरषानी॥ वत्सलखे जैसे धेनु प्रफुल्लित लोचत लोचनलाभ लुभानी । अर्थी सलाभ लहे मीयाफरोशापति रंकमिलै जैसे रतननखानी ॥ दूरही ते उरलाय कृपाकर शीश धरोहरिमस्तक घिरानी । खेलन दूरिकितैगयेमोहन बिल्मदुसै छिनवर्ष बिहानी ॥ ताकूं लखूं तो मैं पाऊं सबैसुखतेरेदरशावन सर्बसहानी । दूरखेलनपुनि जाओ न गोबिंद अबना मानो तो कहा भली जानी ४२ ॥

ग्वालबचन यशोदा प्रति ॥

ग्वाल सुनायकहैहरिऔगुन यशुमतिश्यामहू लीन कुचाली । ग्वालिन गैलमिलैतो लगैं संग हमसूंबिलग लहे पन्थ निराली ॥ बोले बिना बुरीबोलैं बुरीगुन गालिन रारबढ़ावैं दे ताली । कानकरैं तोसूं कहन सकैं सखी शोच सकुच सुन देत न गाली ॥ मार दधिगागर गोपी चलीं मग कांकरी औचक है सही डाली । हट को जो मैं तो हटोनाकरी हट झटक पटक सो नठो ततकाली ॥ गोपी झपट सो लकुट पटछीन के सकुट कोहाथ करोमें सँभाली । रारकोदिन सैं मिटो

सो मैयाजू गोबिन्दै सँभालो रहत न यह ठाली ४३ ॥

श्याम बचन यशोदा प्रति ॥

माता न मोते बनो जो कहो इन यह नामाने बिन बात बनाये । नट खट भारी कुटिल महालम्पट गोप सुतन छलछंद सिखाये ॥ खोटीकहैं कहूं काहूतेकाहू को चोपदेखवालन रार कराये । गोपी भवन लखसूनो लै लरिकन चोरी करी दधि माखन खाये ॥ कहं सुन धाई सखी तो पकड़ कर मुष्ट हने पगपानि बँधाये । मैंजोहरो तो मैंपास करी पुनि दुरगति गोप करतसो बचाये ॥ बिनती करी करजोर कहो इनतेरो भयो सो मैंबन्दि छुड़ाये । अब मोतेबैरकरैकहैगोबिंद समझूं तुम्हें सो यहबचन सुनाये ४४ ॥

ग्वाल बचन यशुमति प्रति ॥

ग्वाल कहो मैं यह सांचोकहूंबनीबातकहै सो महा लघु मानो । मैंआयो तो यही लै गयो गयो मैंही तो यह कहो केहिबिधि जानो ॥ मोकूं लै आपही चोरी करी सोलै माखन भाजो सखी कूं लखानो । दधि मैं नखायो लगायो सो मोहीं कूं आप लैभाजो सो खाय छिपानो ॥ औचक आयगहो सखी मोही कूं मोतेबनी लख श्याम हँसानो । कोमल ताड़न करन चहो सखी इनहीं तो सोखदै कठिन करानो ॥ मैंतो भरोसो करो निज पक्षको बैर कहो इनकह गुन ठानो । यशुमति भोरो सो भाषत गोबिंद जिय को भरोसो महारिस खानो ४५ ॥

श्याम बचन ग्वाल प्रति ॥

श्याम कहो मैं सदा रस बिलसत बिच भरो तू ही मझारिस पागो । तू ही नयो सतबादी भयो मानो कुलको कलंक मिटायमाजागो ॥ औगुनी तोसों तु ही ब्रजमें भयो निपट निलज सदमारग त्यागो । माता हमारीही भोरी मिली सो तू बचन बनाय सुनावनलागो ॥ गैल गलीबन कुंज अकेलो मिलोतु तो देखूंकहांलगभागो । अंग अंग तोडूं मरोडूं भुजा तेरी छीन बिशानलकुट पटपागो ॥ मोकूं न तोते बनेपुनि खेलन गौको बनकरहू बिभागो । जो तू कहै तेरो दास मैं गोबिँद तो न तजूं मेरे हथ न रागो ४६ ॥

यशोदा बचन श्यामप्रति ॥

माता कहो तेरे औगुन मोहन सुनत मैं हारी कहांलों बखान । ग्वालिनी तेरोही चरचा करैं अब ग्वाल बचन क्यों मैं सांचे न जानू ॥ चोरी लई जोरीमिल सखियन कर सुनत उलाहन मन दुखयानू । आपनो बावरो देखै दुखी मन और को बोरोलखूं तो हमानू ॥ मेरोतो एक तुही तृणातोड़ो सो तेरे चवावही सुन अकुलानू । परघर चोरी तजै तूतो ग्वालन माखन तेरेही हाथ लुटानू ॥ जो सदलोनी रुचै तो मैं निज कर जैसो कहे दधिन्यारो मथानू । अबको मानै तो मैं रिसकर गोबिँद सांटीके बल तेरीबानिकुड़ानू ४७ ॥

श्याम बचन यशोदा प्रति ॥

श्यामकहो मेरी बानि सदा तुम जानतमातसो कैसे भजानी । भोरही घरते लै ग्वालन संगलगखेलकै धाऊं

सो आऊंसँझानी ॥ धेनुदुहनवन बांधन खोलन क्रत्त कहूं नित सांझ मुरानी । तेरा हियो मेरा माखनको घट न्यारो धरो भरो दधिकी मथानी ॥ मोकूं न लेश अवकाश मिले कब कौनकोक्यों धरी वस्तु चुरानी । गैलनग्वालिनीघेरनचावतवन वनग्वालनधेनु घिरानी ॥ माना न मैंता कहांमिलताही सं जाना प्रपंचना सोतें रिसानी । प्यारा बलाजूकहै मेरोगोविंद उनपै रहूंतेरी मानूं न बानी ४८ ॥

यशोदावचन कृष्ण प्रति ॥

यशोदा कछुक सुत खीजोलखोमुखभीजोसप्रेमढरे दृग आंसूं । प्यारो हरी मोकूं प्राननते मन राखूं सदा सुख निरख हुलासूं ॥ तूमम जीवनजीवतुही बिनतेरेन जीवनछिन अबलासूं । मनकोलखूं तेरे मुख दृग वैनतें मानूं मैंचित्त सकोच विकासूं ॥ उमगोहियेउरलाय ले आंचर हरि मुख पूछो विसारो प्रियासूं । ताकूं जोपै धौरी धेनुप्रिये ततसोरोसो मिसरी लै पास्रो सुहासूं ॥ भाषीमरोषी सखा सखी श्याम कूं दीनगिनो सो कहा मनभासूं । त्रिभुवन सम्पति मेरे गोबिन्द सो उनके कहा करैं परतरिकासूं ४९ ॥

यशोदा पुनर्वचन ॥

आओरे ग्वालन आवें ग्वालिनी श्यामकी नितनई आय लगावें । भोरोसो बाल खिझावे न ग्वालन चोरे नमाखन अनरितगावें ॥ सबही के सुत प्रिय सबहीकूं

विसन करै क्यों मित्र मेरो सो लाल कहो कहांपावैं ॥ मोकूंतो प्यारो कृष्यारो उन्हें निज हेत जो श्याम कूं नाच नचावैं । हूं ब्रजबासिनजानत निज कर और हो अपनो परायो जनावैं ॥ ताकूं कहा ब्रजजनते पड़ी दधि मेरेही तेलै भले घरधावैं । तेरी सों गोबिन्दमानू नएकहू कोई भले लखि बानो बनावैं ५० ॥

यशोदा पुनर्बचन कृष्णप्रति ॥

लाल जू वेगचलो घरकूं मुख बिलमते भूख लगत कुम्हलाओ । तूकितडोलतखेलप्रमतइत बोलतरोहिणी पाक बनाओ ॥ चलतूमैंबलकूं बुलाऊं युगलमिलअमल रसालन भावें सो पाओ । टेरी पुकार कहो बलराम होश्याम हू बाट बिलोकत आओ ॥ बिलसत बलजू रहस कतदूतन सखन मैं माता बचन सुन पाओ । भ्रात कीप्रीति मैं त्यागी रुची कलिदेर मिले सो दरश उतसाओ ॥ जीते सखा सो लियेनिज पश पुनि दीनो सो हारे अपुन धन दाओ । जीतगिनी जो सूने घर गोबिँद हारे जो हर बिन कालबिहाओ ५१ ॥

श्याम भोजनकृत ॥

बलजू इतै इतश्यामलला मिलबिहँसिपरस्पर मोद बढ़ावें । यशुदा लै धाई भवनसो युगल छबि निरखत रोहिणी आनन्द पावें ॥ अजर शुची सो महा रुचि शोभित अष्टा अटालिकउन्नति भावें । मोतिन झालर पटिल अभरन परियंकसुख आसन दिव्य सुहावें ॥

क रुचावैं । मणिनखँचित रज सुरनरचित कर पावन झारी ले पानि नपावैं ॥ सुन्दरनन्द भवनमणि कंचन जटित फटिकमणिखम्भ सुहावैं । बिलसत रहसयुगल मिल गोबिँद परसत मातबिलोक सिहावैं ५२ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

सोहत अजिर हलधर श्याम ॥ टेक ॥ ग्वाल बालन बोल सुनलिये धाये तजि निज धाम । कोइ सखा घन श्याम टेरे कोइ कहै बलराम ॥ मोर बानर भ्रमत इत उत श्याम भीत सकाम । कोर डारत रहस गोबिँद निरखि मुद ब्रज बाम ५३ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

बिलसत युगल बल गोपाल ॥ टेक ॥ मधुर बलमधु पर्क प्रिय कर देत लेउ नँदलाल । रुचिर माखन सिता मिश्रित देत श्याम रसाल ॥ बिबिध ब्यंजन देत मोहन पावैं रुचिरुचिग्वाल । मुदितजनमुदमातगोबिँद मुदित बल मुद बाल ५४ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

राजत श्याम सुंदर रूप ॥ श्याम तन पित बसन सोहत रूप यौवन जूप । मुकुट शिर कुण्डल श्रवण गलमालत्रिभुवन भूप ॥ केवड़ो कस्तूरिकेसरदिव्यगंध अनूप । सुरुचिबाय खवाय गोबिँदसुरसपायसपूप५५॥

सखीबचन सखी से ॥

राचतश्यामग्वालनखेल ॥ टेक ॥ भोजन उत्तर कर

जैसे बत्स अलेल ॥ कोई झपट गिरि उठत भाजत देत कोई धकेल । युगल मिल गलबाहँ गोबिँद फिरत ले निज मेल ५६ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

खेलत सखन श्यामसिहाय ॥ टेक ॥ कोईसखा दृग बाल मीचत कोईग्वाल दुराय । भजत जोइ सोइ चोर डरहूं जो सखा न छुआय ॥ नृपति सोइजो प्रथम घरसै धेनु धूसर धाय । कबहूं गोबिँद गेंदमारत कोई लपक लै जाय ५७ ॥

ग्वालबचन श्यामप्रति ॥

टेरत ग्वाल हो गोपाल ॥ टेक ॥ हमों तुम खेलन चलैं बन यमुन तट ब्रजबाल । अपनी अपनी गेंद लकु-टन लैचलैं सब ग्वाल ॥ प्रथम चलपावैं पकेफल कन्द मूल रसाल । खेलैं पुनि गोबिन्द बनबन हँसचले नँद-लाल ५८ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

ग्वालन संग श्रीभगवान ॥ टेक ॥ हरषयुत बाहर पधारे पाये नन्द महान । प्रेमकर उर लै बिठारे कीन मस्तक घिरान ॥ भ्रात प्रिय निजमात बल्लभ कौनतुम बिन आन । नन्द आनँद कन्द गोबिँद मोर जीवन प्रान ५९ ॥

नन्द पुनर्बचन ॥

मोहन मोर आनँद कन्द ॥ टेक ॥ तोबिना छिन

विगत शुभ क्रांति वृन्द ॥ तुही मम सर्वस्व मोहन तुही सर्व आनन्द। मोरमन रजनी शरद गोबिन्द तो मुख चन्द ६० ॥

नन्द पुनर्बचन ॥

भायत नंद नेह बिचार ॥ टेक ॥ भोरदे दर्शन गयो सुत आयो अवछकवार। सहर खेलनते बुलायो पायो भोग अवार ॥ आज नहीं गौवन सँभारो लै गये बन ग्वार। तोबिना गोबिन्द गोधन धाये बाटनिहार ६१ ॥

कृष्ण बचन नन्द प्रति ॥

बाबाहूं नहीं दूरगयो ॥ टेक ॥ भोरही आज ग्वाल मोहिं टेरी मैंहूं बोल दयो। भाजत फेर मोहिं नहीं पायो सो कहूं लोप भयो ॥ पुनिमोकूं सखीन लखि लीनो अपनो दावँलयो। गोविँद आज भाज कहाजैहो कालही दधि चुरयो ६२ ॥

नन्द बचन श्याम प्रति ॥

गौधन तोय देखि सिहाइ ॥ टेक ॥ धौरी धूमरि कारी कजरी तेरे हाथ दुहाइ। सामरी लाखी ललोही इतर लखि ललितयांइ ॥ सुन्दरी श्यामा कसेरी तोरहेत रँभाइ। नैन कान पसार गोविँद लखे चहुंदिशिगाइ६३॥

पुनर नन्द बचन श्याम प्रति ॥

डोलत ग्वालबै तोयबोल॥ टेक ॥ लगत नहीं मोहन बिना मन फिरत डामाडोल। आय कोइ लखजायइत उत कहत नहीं मन खोल ॥ पूछै कोइ ढूंढे पुकारे चहत यमुन किलोल। कहत कोइ गोबिन्द कितगयो जासु

कृष्ण बचन नन्द प्रति ॥

बाबा नहीं गहन बन धाऊं ॥ हूंन खेलन दूर जाऊं जाऊं तो फिर आऊं । मधुर फल परिपक्क उन्नत बिटप चढ़ि नहीं खाऊं ॥ इतर ग्वालन मूढ़सम गाऊ पूछ गहन भजाऊं । ग्वाल कहैं गोबिंद चालोतुमर आयसुपाऊं ६५ ॥

गोप बचन नन्द प्रति ॥

चरचत गोप वृद्धि प्रधान ॥ टेक ॥ नन्द जू नन्दन तिहारो चिरंजियो भगवान । चतुरतर सुन्दर जतावर रूप निधिगुण खान ॥ बचनप्रिय लोचन मनोहर मधुर मृदु मुसकान । ग्वाल गोपी गोप गाऊ गोबिंद जीवन प्रान ६६ ॥

इतर गोपबचन प्रति ॥

सामल सकल मिल हुलसात ॥ वृद्धि जन मिस देन सिखवन मुदत मन बतरात । कृत निमत बोलत पुकारत नर तरुण हरषात ॥ गलिन धन ब्रजबाल खेलत नैन बैन सिहात। नित नविन गोबिंद चरित न सखिन चित्त सिरात ६७ ॥

अथ गोप बचन ॥

खेलत युगल बल घनश्याम ॥ टेक ॥ इत हरी यूथप बने उत यूथ पति बलराम । गेंद मार प्रहार फूलन दोउ करत संग्राम ॥ जय पराजय चहत भाजत गिनत छांह न घाम । जीत पुनि गोबिन्द हरषत धरत नृप निज नाम ६८ ॥

इतर गोपबचन ॥

सामल सुघर बरगुण खान ॥ टेक ॥ गावैंमनमोहन अधर धरबांसुरी सुरतान । धेनु मिलविकुरैंभजेंसोउठाइ पूछ और कान ॥ लज्जत क्रत गोपीघरनतजि भजतनमि कुल कान । धुनित धुनि कुनकुनत गोबिंद मधुर सुर धुनि गान ६९ ॥

सखी बचन सखियन प्रति ॥

श्याम तटयमुनचरावत गायें ॥ टेक ॥ धेनुचरतहरि ग्वालनबिहरत जब तब सुरतकरायें । हेराहेरकदम चढ़ि देखत बन बीथिन बिलगायें ॥ पन्थ कपट कोइ झपट पुकारत सुनगौ कान लगायें । गोबिंद नाम ले मुरली बजावत चहुंदिशाते घिर आयें ७० ॥

सखीबचन सखीसे ॥

श्याम घर धेनु ले बनते आवें ॥ शीश मुकुट कटि पित पट सोहै बसनपवन फेरावें । अलकन पलकन कचरजराजत श्रमकन मुख दरशावें ॥ आगे पाछेबाम दहन गौ बीचमें श्याम सुहावें । गोबिँद ग्वाल धेनु ले आवें गावें बजावें रिझावें ७१ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

श्याम छबि निरखें सकल ब्रजनारी ॥ टेक ॥ गैल गलीदरीद्वारदुवारिन ठाढ़ीहैंअटाअटारी । देखेंदिखावें सिहावें कुसुमदल बरषावेंन्यारीन्यारी ॥ आनन्द कर कोईउरन समावत गावत मंगल चारी । गोबिँद रूप अपारनिहारत सबहिन गति मतवारी ७२ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

आवत श्याम मोद ब्रजमाचो ॥ टेक ॥ ग्वालनबिन धुनि गावें बजावें एकतेएक अधिक रस राचो । इत ब्रजनारि पुकार सहचारिन हरिगुन गान मधुर सुर बाचो ॥ धेनु बत्स इत बत्स धेनुहित रंभावत मानोमिल बन जाचो । गोबिँद मुरली सुरन मिलि तुमुलित शब्द भयो जानो मंगल नाचो ७३ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

कहतसखीसों उमग भरी धाई ॥ टेक ॥ श्यामचहै तो मिलाइं मैं चल मिल ग्वालन सँगजहां धूममचाई । सिरंग सारंगी मृदंग तमूरे मँजीरे मधुरसुरमुरली सुहाई ॥ अंगुरिन चुटकी बजें करतालन गावत औरकोइ तान बताई । चंग मुंहचंग बजें कोई निरतत गोबिँद गति हूं अबी लखिआई ७४ ॥

सखीबचनसखीसे ॥

याही गली सखी श्यामबिलोकत ॥ टेक ॥ सोनित राधा सखिन सँग बिलसत बार कुवारन हम नहीं टोकत । श्याम रसिकसो नबिन रस गाहक श्यामा न क्यों लैसखिन संग रोकत ॥ एकसी प्रीति अनेकन सों फिर एकहीक्यों निज हियरा फफोकत । प्रेमजहां सो बसैतहांगोबिँद तूनिज प्रीतिनक्योंमनधोकत ७५ ॥

सखी बचन प्रियाप्रति ॥

एक सखी हँसि बोली प्रियाहसअचरजएक अनोखो निहारो । दूजी सखी इत गैल छिपी उत श्याम

बराय दुरै कर डारो ॥ करमें लेकर दोउ ठाढ़े हँसत कोई गोपी निहार सखी को पुकारो।· सो लज भाजी कहो खिज गोबिँद कौनसखीकहाँगाँव तिहारो७६ ॥

सखी बचन प्रिया प्रति ॥

एरी प्रिया हम एक सखी गत भोर ही भवन ते उठत निहारी । निरखि मुकर खिज पोछै कपोलन हरिमुख चरवित पान अरुनारी॥ बरयो कुरस कज-रारे दृगन जल कारी बिचित्र सँवारत सारी। कंचुकी रंचक चलित प्रमीड़त टूटो तनी खुली लटन सँवारी॥ चूरीचरक पटकोर तड़करही नोसी सरकसो दुरावत प्यारी। तोड़तअंग मरोड़त भृकुटिन जागी प्रबस निशि रहस बिसारी॥ बसन सुहात नभावत भूषण सखियन सँगअनखावत नियारी। सो जो तो हटी हटे कहूं गोबिँद देख दिशा दै हँसी हम तारो ७७ ॥

ललिता बचन राधा प्रति ॥

राधा कित मति भोई तेरी ॥टेक॥ अपनोसो मन गिनत हरी को जानत बश अपनेरी । तु निज प्रीति समुझ मन उमहत उन प्रिय कर नहीं हेरी ॥ गोपी अनेकन एक हरी उन प्रीति जनाय ठगोरी। तुमहीं चतुरतो चतुर तर गोबिँद नहीं मन भाव लखेरी ७८ ॥

बिसारवा बचन राधा प्रति ॥

नन्दलाला मुरली वाला री ॥ नैन बिशाला बैन रसाला मैनमनोहर बालारी। रूपनवीलो भूपछबीलो चलत लजित मतवालारी ॥ कटि पिनशाला गल गल-

माला कानन लूलू लाला री। गलिन मिलो जब ते
अलि गोबिँद नहीं मन जात सँभालारी ७६ ॥

सखी बचन सखी से ॥

गहले श्याम मुरलिया अपनी ॥ टेक ॥ त्रिभुवन भावनी मोहनी गावनी सुरनर मुनि मनबसनी। प्रिया मन रमनी त्रियन सपतनी मोहन प्रीति अकसनी ॥ अति बड़भागी हरिमुख लागी सुर धुन कर जिया नसनी। तप अनुरागी बन रुचि पागी अधर सुधारस चसनी ॥ हाहा करूं दोऊ कर जोडूं सहन बिरह नहीं सखनी। हृदे मेरे मीड़त पीड़त नागिन जिमि तन डसनी ॥ यह सुख हरनी बेकल करनी निशि दिन हीये कसकनी। मंत्रनबांधी सुरसर सांधी गोबिंद प्रेम सुरसनी ८० ॥ सखी बचन सखी से ॥

होरी साचत राचत रंग ॥ टेक ॥ हरषितअंगउमंग भरे मन रंग सखा लीये संग। मृगमद अगरमलै गिरि केसर घोर बसन बोरे अंग ॥ घुमड़ गुलाल सुरंगनिशा छाई उड़गण अबीर फुलंग। तड़ित बसन द्युति नीरद बपु छबि लाजत कोटि अनंग ॥ मुरली मधुरधुन भेरि झांझ डफ घुरत मृदंग उपंग। प्रेमते गावत ग्वाल श्याम गण छिनछिन बढ़त उमंग ॥ इत सखियन ले प्रिया उठधाई बाजत चंग मुंहचंग। गोबिँद प्रेम बिवश प्रिया बिलसत धन धन ब्रज रसरंग ८१ ॥

कृष्ण बचन सखी प्रति ॥

सखीरी तेरो मोहन अधिक शिंगार ॥ टेक ॥ कुंडल

करन अरून अधरन छबि नैनन बान प्रहार। केशन कुसुम भाल शुचि केसर नकबेसर गलहार॥ तो नव यौवन शोमन लोभन बचन मनोहरगार। शशिवदनी धन प्रेमसनी मनगोबिँद ओर निहार ८२॥

सखी बचन दूसरी सखी प्रति॥

बिहारी मोसंगेलन ठानत रार॥ टेक॥ सुनियोरी मेरी हेली सहेली घेरी अकेली बिचार। हूंअजहूंदेहर नहीं नाखी आजहि आई अबार॥ श्याम सुनावत बानीसयानी छेड़त बोली डार। गोबिँद शुन सुन महर हनेगिन गालन गुलचा चार ८३॥

सखी बचन श्याम प्रति॥

माधोजी म्हारे राधाजी को राज॥ टेक॥ कीरति जूकी परम दुलारी सखियन में शिरताज। सुरसुर बाम धाम तजि धावत नेक दरशके काज॥ तुमसेग्वाल गुपाल हज़ारन फिरत सम्हारत साज। बारमिलें नहीं रारिमें गोबिंद कालि करेसो आज ८४॥

श्याम बचन सखी प्रति॥

तुम्हारी प्यारी राधाजी हमदेखी॥ टेक॥ अंगअंग ते ठगईसी डारत यौवन साज बिशेखी। तुम चतुरन ते चतुर चतुर गुण बांचत बात अलेखी॥ जाके काल चले भृकुटिन गति सोसखियनमें सखी। गोबिँद भावनोत्रिभुवन स्वामिनी तुम निजकर कहा पेखी ८५॥

चन्द्रावल बचन श्याम प्रति॥

राधाकूं माधो निज गुणगान करावैं॥ टेक॥ सो

तोकूं तनु मन कर चाहत तो बिन कछुन सुहावै। तुउन बिन इन गलियन डोलत इतर न मन लुभयावै॥ जो कोई जाय कहै इन बातन प्रिया मन रिस न समावै। मोरभवनइतनिकटहुगोबिँद चलोतोकोईनलखावै ८६॥

चन्द्रावल पुनर्बचन॥

हमारे प्यारे उपवन भवन समारे॥ टेक॥ सुबर्ण खम्भ जटित मणि रतनन मोतिन बंदनवारे। रुचिर अजिर तहां दिव्य सुगंधित बरण बरण फुलवारे॥ नीर मधुर शीतल शुचि सुन्दर सोहै सरोवर न्यारे। शीतल मंद सुगंधित गोबिँद पवन बहावनप्यारे ८७॥

राधा चन्द्रावल सम्बाद॥

श्याम गवन चन्द्रावल संग चहेश्यामा इतैसखियन सँग आई। गावै परस्पर रहस हरीगुण गूजरी सकुच पुनि मन हरषाई॥ प्रियाते कहेहम तुमहित मोहनरोकेयहांरसबात बनाई। अबदोउ कुंवर मनोहर मूरति मानो रतीरति राज सुहाई॥ सरूप सदन हरि प्रिया छबि सागर शोभा परस्पर अति अधिकाई। ललिता बिसाखाले चम्पलता पुनि चंपक चंपासखी जुड़ आई॥ गावैं बजावैं रिझावैंपरस्पर श्याम दरशते महा सुखपाई। यमुना पुलिन तटरमणीय गोबिँद सोहै सो रास बिलास रुचाई ८८॥

सखी बचन सखीसे॥

लखे सखी श्याम कदमकी छैयां॥ टेक॥ श्यामा संग बिलसत गलबैयां। औचकमें भौचक रहीसजनी

इकटक देखत पल न लगैयां । रतिपति रती मानो बिहरत उपबन इन्द्र शची जानो सुरतरु पैयां ॥ सुरकुसुमन करहार हरीगल प्रिया उरसशि गण माल सुहैयां । गोबिंद यह छबि कहि न सकत कबि सुर नर मुनि मोहित बन गैयां ८९ ॥

सखी वचन सखीसे ॥

सखीरी तेरो कैसे कहां मनखीजो ॥ श्रमकनकर मुख लखत पसीजो लाजनीर चितभीजो । देखतकहूं पगधरत पड़तकहूं वेगहीआई चलीजो ॥ सोईकहूंआनननी सखियनतें हमहूं सो अबहीं कही जो । सरीभूट जहां सखियन जुड़ मिल प्रिया मुदमांच रही जो ॥ श्याम हू ग्वालन सँग चलिआये सहजही भेंटभईजो । मुरली हरिकी हरि प्रिया पुनि हरी प्रिया उरमाल नसीजो ॥ बहुरि परस्पर मुसामुसी भई पड़गई लीजो दीजो । हूं गोबिन्द प्रिया सखियन तजि भाजी न चरचा कीजो ९० ॥

सखी वचन सखीप्रति ॥

रात सखा सपने में देखे यशुमतिसुत वृषभान ललीरी । वेता ठाढे यमुन पुलिन तट हूं इत निकटतेहो निकसीरी ॥ जलधर सजल श्याम बपु सुन्दर तड़ित छटा प्रिया छबि दरसीरी । पीताम्बर सांवल नीलांबर प्रिया छबि नभ ससकांत दुतीरी ॥ श्रुति कुंडल गल कौस्तुभ शोभित शीश मुकुट कटि फेंट कसीरी । कूकतमोर कोकिला किलकत मुरली मधुर धुनि

विपिन बसीरी ॥ औचक ते भौचक भई सजनी जाग पक्षी फिर पलना लगीरी। सो गोबिन्द प्रिया छवि चितवत चित्तबसी मति विगत भईरी ९१ ॥

सखी बचन सखीप्रति ॥

राधा माधव बिलसत यमुनातीर ॥ टेक ॥ सीरी सुगन्धित मन्द समीरू कुसुम सुहावन शीतल नीरू। क्रीड़त मोर कोकिला कीरू मुरली मधुरधुनि धुरति गँभीरू ॥ सखीसुन मोहनी धुन अतुराई तजिवृन्दन धन दूधन धाईं। निरतत विरत हरीगुण गाई धाये तुरातुर ऋषि मुनि धीर॥ सप्तसुरन त्रयग्राम अलापन सुरतिकरि तान मान गति जापन। हाव भाव भावन विज्ञापन सखीकर हरीपट हरीकर सखिथनचीर॥ सखी नृत कृतकरि कृतकृत भावै प्रियकरि गोबिंद गोबिंद गावै॥ नभते देव पुष्प बरषावै विहरतमुदमन सखियनभीर९२॥ सखी वचन सखीसे॥

श्यामजी से प्रीतिलागी कोई जाय कहियो जू॥ जैसे प्यारे श्यामाजीके तैसे मेरे रहियोजू। जाकोमन लेशलागो पलहू न तुम त्यागोजू ॥ बान जो सदाकी कहिये अबहूं निभयोजू। जीवनके जीकी जानो सब हीको हेत मानो मोकूं निजदासी चीनो आपनी कहि योजू॥ पहिले चित्त बित्त लीनो फेरना निबाहकीनो जैसो मन मेरोमोहो तुमहूं सुहयोजू। गैलमोकूं देखि त्याजे मिलूंतो बराय भाजे गोविन्दकी ऐसी शोभा मेरे मन भैयोजू ९३॥

सखी वचन कृष्णप्रति ॥

मोहन मानो वचन हमारो ॥ टेक ॥ राधाजीसों बोलत चालत मधुर अलाप उचारो। कोमल हिय अति भोरीबारी सहत न रोय तिहारो ॥ नेक मलिन मन तुमकूं देखत बिसरत नींद अहारो । गोबिंद उचित प्रोति अति प्रियाते प्रेमकोभाव बिचारो ९४ ॥

कृष्ण वचन ललिता प्रति ॥

ललिता बात सुनो यह मेरो ॥ टेक ॥ प्रिया बिन मोकूं छिनहूं बनत नाहीं कबहूं न पल बिलगेरो। मोसन प्रिया नित बिलसत प्रियचित मान गमान भरेरो ॥ हूं तिनको मन हाथन राखत तब उन रास रचेरो। भावपरस्पर बिदितसो त्रिभुवन प्रियागोबिंद भजेरो ९५ ॥ बिसाखाबचन प्रियाप्रति ॥

प्रियाकृतिअद्भुतकरतहरी॥ आजनहींतुमहित बन धायो नहींपर प्रगटकरी। निजमन तुमअभिलाषारा-खोपर नहीं दृष्टिपरी ॥ तवचित हर्षत पावे जनामन मोमिर कृतधरी। गोविन्द शान्त जान अबतो मन आवत पल बिसरी ९६ ॥

ललिताबचन श्यामप्रति ॥

मोहन मानमेरी कही ॥ टेक ॥ गोपिनहँसैबो हांसबो रसमोद सरिता बही। तुमचित्तइतरन भावनासुनि लाड़िली मनदही ॥ यह दान मान करामनी तुमहूं हरीअबगही। राधा गोविन्द मनाय चल कीजै प्रिया मनचही ९७ ॥

बिसाखाबचन प्रियाप्रति ॥

राधे चलो टेरत हरी ॥ रसरहस निशि महारासमें रिस नाहीं सोहतकरी । तोमान भूषण भामिनी पर सोहै समय अनुसरी ॥ बिनहेत्त ठिनगन ठानिबो यह बानि कबसों परी । गोबिन्द नेह बिचार चल्ल जानूं सो तो मन धरी ९८ ॥

सखीबचन सखीप्रति ॥

जानत कौन श्यामके मनको ॥ टेक ॥ सोसबहीके मनकी जानो कहेतन अपुन चहनकी । हमरेहियकी जानि समारत रहत न बात कहनकी । बरबश प्रेम बिवश अनुरागो भक्ति लखी सखियनकी ॥ प्रिया गोबिन्द बिदित सो युगल छबि सुखदायक त्रिभुव-नकी ९९ ॥

कृष्णबचनराधाप्रति ॥

प्रियाजू सों बिनती करतकन्हइयां ॥ टेक ॥ चिबुक पकड़कर जोर मनावत प्यारी तिहारीदुहइयां ॥ मो-मन एक सो तुम तनलागो इतरन कान चहइयां ॥ बोलतलेश बिलग नहीं मानोनितप्रति सो नरहइयां । अबगोबिन्द प्रिया चलि बिलसैं निखरोहै कैसोजुन इयां१०० ॥

श्यामाबचन श्यामप्रति ॥

श्याम तुम जहां बसे तहां जाओ ॥ टेक ॥ अंतर इतरन प्रीति निरन्तर हमसों प्रगट जनाओ । एकही मन सोइ सखियन बासो और कहांसों लाओ ॥ हा-

मन सखिन लभासन हमसों सुन सुन मन अनखाओ। गोविन्द यहां नहिं आवन पैहो निजकृत को फल पाओ १०१॥

विसाखाबचनश्यामाप्रति॥

प्रियाकैसी बिनतीकरतकन्हाई॥ टेक॥ करजोरै तुमचरण छुअन चहै सो नहीं उचित सुहाई। श्याम द्रवन रसरहस चहन लख अबहूं तजो कृपनाई॥ कृषि मचित कठिनाई त्यागो गहोनिज कोमलताई। गोबिन्द नेह निहारनहितकहूं अद्भुत युक्तिबनाई १०२॥

सखीबचनसखीप्रति॥

प्रियाछबि अद्भुतआजबनी॥ टेक॥ हरिसँगसखियन यूथ यूथ प्रति विहरत चोप ठनी। चन्द्रावली रतीनेहा सनेहारूपलता रतनी॥ चदनी मदनी मदनका मोहनी चम्पकली रमनी। रास बिलास हास रस राचत गोविन्दप्रेमसनी १०३॥

सखीबचनसखीसे॥

आज गिरिधारी कुंज बिहारीसंग बिलसत राधा प्यारी॥ यमुना पुलिन तट बासै सखियन मिल रास बिलासै मुदहास परस्पर हासै छबि सागर अगम अपारी॥ राधा माधोमाधो भावै माधो राधेराधे गावै अति प्रीति की रीति सुहावै निरतत कृति न्यारी न्यारी। श्यामगावतसुन्दर गाना श्यामा धारत कबहूं मानाहरि बिनवत करना नाना दोऊ लीला प्रेम प्रचारी॥मृद घुरत मृदंग उपंग सारंगी चंग मोचंगमना

विहरत रती अनंग गतिगोविन्द पर बलिहारी१०४॥

सखी वचन सखीसे॥

चलोरी वृन्दावन विहरत श्याम॥ टेक॥ कदमन विपिन सुहावत सोहन कुसुमन बरन गंध मनमोहन श्यामभये सखियन रस गोहन टेरत मुरली में लै लै नाम। अप्सरा श्रुती देव बधूअन गिन हरी अवतारन शक्ती अनेकन प्रकटकरी जे नर नारायण सोई सब आय भई व्रजबास॥ सभी सखी गोलोक बिहारनी श्रीपुर श्री संगरहे सप्रचारनी रत युत रघुपति रूप निहारनी सुरन सिया प्रकटी व्रजधाम। सिया सखी अगणित इतर अपरमित प्राप्तिभई हरीसंग बिलसन हित उमगत उमहत निरतत मुद चित प्रिया संगहरी प्रियाहरी अनगाम॥ बरन बरन पट बसन सुहावें को किला वैनी मनोहर भावें मुरली सुरन धुन मिलसखी गावें प्रकटत रस उघटत गुण ग्राम। सीपी बासी सुक रीकेरी गज मीन महोत्सट् बिधि प्रकटेरी मुक्तामाल वैजन्ती लसेरी हरि छवि त्रिभुवन मन अभिराम॥ कबहूं बिरत रस प्रिया अतुरावै प्रेम कोप कर मान जनावै हरि विनवैं कर जोड़ मनावे मानो ब्रज विलसत रतियुत काम॥ गोविन्द हरि प्रिया रास रचायो सुर नर नारिन मंगल गायो शरद निशा शशि अति उजलायो चन्द्र दुती मानो शीतल घाम १०५॥

सखी बचन सखी प्रति॥

भावें श्याम रास रस पावें॥ कदमन विपिन सघन

हरयायो। पुष्प सुगंधित बन महकायो ॥ निर्मल दिव्यकान्त शशिछायो। गावैं सखिन समूह सुहावैं ॥ यूथयूथहरि संग जुड़िआई। प्रिया संग प्यारे समूह सुहाई ॥ दोऊ चित चोप लागि अधिकाई। निरतत भिन्न भिन्न गति गावैं ॥ हरीकर सखी निज करन पकरहै। चक्र कृती भ्रमत नृत्यकरहै ॥ मुरलीमिलान मधुर सुर भरहै। रुचिर मनोहर बाद बजावैं ॥ कबहूं दुरित हरि प्रिया अकुलावत। दुरित प्रिया तो हरी प्रगटावत ॥ तारी परस्पर दै हरषावत। गोविन्द प्रिया कृत हास रुचावैं १०६ ॥

गोपी बचन सखीन ते ॥

श्याम सुन्दर छबिभ्राजबनी ॥ मोरमुकुट शिरपवन झकोरत कुण्डल हलन मोदमन बोरत। भृकुटी कुटिल मन मदन मरोरत रूप छवा छवि चोप ठनी ॥ वाम वाहु कृत वाम कपोलो मधुर सुरा कृत वैन अमोलो। पुनि पुनि कुन कुन राव अतोलो मुरली धुनित धुनि प्रेम सनी ॥ गुंज पुंज कुसुमन वनमाला रतनांगद मणि किंकिणि जाला। तड़ित वसन सांवल नन्दलाला नीलाम्बरप्रिया शशिवदनी ॥ सैन बैन कर चरण चलावै हाव भाव कृतरुचिर सुहावै। गोविन्द नबीन गुनावली गावै श्यामप्रिया त्रिभुवन रमनी १०७ ॥

गोपी बचन सखीनसे ॥

प्रिया संग विहरत सखिन हरी ॥ श्याम प्रेम लखि सखी इतराई। चहत प्रचरजा कृत्यकराई ॥

पग मर्दन कहैं शीश गुहाई। हरी निज लोपन युक्ति करी ॥ १ ॥ श्याम बिना सखी सब अतुराई। तरु पशुपक्षिन पूछति जाई ॥ शशि देखे हरीकहो कहां पाई। भोर सखिन बन भ्रमत फिरी ॥ २ ॥ पुनि गोपिनि प्रिया कूहरी कीनो। सखियन रूप सखन धर लीनो ॥ जब हरि लीला स्रुति चित दीनो। प्रगटत हरी हरिषत सगरी ३ ब्रज बनितन मिल मगडली पारी ॥ बीचमें निरतत हरी प्रियाप्यारी ॥ नवक्रति रत मन बसत मुरारी। गोविन्द गुन गन धुन उचरी ॥ ४ ॥ १०८ ॥

सखी बचन ॥

स० ॥ राजतमोर मुकट शिरसुन्दररूपकोऊपतेनील मणि लाजत। भृकुटी कुटिल छबि चंचल नैन सलोने मृग छोने बिराजत ॥ गोल अमोल सतोल कपोल हैं अरुन अधर बिम्ब फल जिम राजत। सामल गात सुहात गोविन्दकोजैसेभजेमनवैसेहीछाजत १०९ ॥

सखी बचन प्रिया से ॥

टेरतप्यारीसामलिया चलो इतरजनी बीती जाय। घेरत मान मलानिया नवल तब तोसूं कछू न बसाय ॥ रास में हास हास में रोशन पुनि पुनि छबि अधिका य। गोबिन्द सखिन समूहन राजत तो बिन कछु न सुहाय ११० ॥

श्याम वचन प्रियाप्रति ॥

करत प्रियासूं प्यारो रसकी बात ॥ टेक ॥ कैसो

उदास हँसीदृग छाई नासाको आई दिखात । अवसोई छबि अधरन पर पाई सुनत प्रिया मुसकात ॥ देखे प्रिया दोउ दृगन मिलावें कौन बिलम पलकात । निरखत हरिकर झपक मिचावत हारिप्रिया हंस जात ॥ करही में निजकर दाब मध्यमा कहत सो कोन गहात । चतुराई ते प्रिया गहपावत हरहुं बहुरि हरयात ॥ तारागरा गिनबोकृत ठानत गिनत गिनत बिसरात । गोविन्द प्रिया कर पकड़ ले आये काहे बितावत रात १११ ॥

सखीवचन सखीसे ॥

चलोरी सखी मोहन राचो रास ॥ टेक ॥ मुरली अधर धर श्याम बजावत गावत सुर सुखरास । चहुं दिशाते उमगी सखी आई ज्यों उड़ुगन शशिपास ॥ सखी अनिगिन मन मोदित निरतत हरि मिल गावैं सुभास । चौंप परस्पर निरतत गावत करत मनोहर हास ॥ सुर सुरनारि कुसुम बरषावत पशु पक्षिनतजे बास । मुनिन तपोधन त्यागे तपोबन धाये रास दरश आस ॥ एक हरी फिर यूथयूथ प्रति दरशत करत हुलास । एकएक संग बिहरत गोविन्द जानत को गति जास ११२ ॥

चंद्रावलि बचन श्याम प्रति ॥

राधाको माधो निजशनमान करावे । सोतोको तन मनकर चाहत ताबिन कछु न सुहावे ॥ तू उन बिनइन गलियन डोलत इतरन मन लुभियावे । जो कोइ जाय

कहे इनबातन प्रिया मनरिस न समावे। मोर भवन इत निकट सुगोविँद चलो ता कोई न लखावे ११३॥

पुनर बचन चंद्रावली॥

हमारे प्यारे उपवन भवन सँभारे। सुबरण खम्भ जटितमणि रत्नमोतिन बंदनवारे॥ रुचिरअजिर तहां दिव्यसुगंधित बरणबरणफुलवारें। निरामधुरशीतल शुचिपूरन सोहे सरोवर प्यारे॥ शीतलमंद सुगंधित गोविँद पवनबहावन प्यारे ११४॥

श्यामा श्याम समागम सखिनसहित॥

श्याम गवन चंद्रावल सँग चहो श्यामाइतसखियन सँग आई। गावें परस्पर रहसहरीगुन गुजरी सकुच पुनिमन हरषाई॥ प्यारीतेकह्यो हम तुमहित मोहन रोंके यहां रस बात सुनाई। अब दोउ कुंवर मनोहर मूरति माने रतीरतराज सुहाई॥ सरूपसदनहरी प्रिया छवि सागर शोभा परस्पर अति अधिकाई। ललितविसाखा ले चपलता पुनिचंपादे आदिसखी जुडआई॥ गावेंबजावेंरिझावे परस्पर प्रशंसदर शते महासुखपाई। यमुना पुलिनतट रमनीय गोविँद शोहे सुरास बिलास रुचाई ११५॥

सखीसे सखी को बचन॥

लखे सखी श्याम कदमकी छैयां॥ श्यामा संग बिलसत गलबैयां॥टेक॥ औचक मेंशोचकरहीसजनी इकटक देखत पलनलगैयां। रतिपतिरतिमानो विहरत उपवन इन्द्र शचीजानो सुरततपैयां॥ हरकुसुमनकर

हारहरीगल प्रिया उरमनगनमालसुहैयां । गोविंद यह छविकहिन सकतकवि सुरमुनिमोहितबनगैयां ११६ ॥
कीरति जूकी परम दुलारी सखियनमें शिरताज । हुर सुर बाम धामतजिधावत नेक दरश के काज ॥ तुमसे ग्वाल गुपाल हजारन फिरत सम्हारत साज । वारमि लैनहिं रारमें गोबिंद काल करै सो आज ११७ ॥

श्याम बचन सखी प्रति ॥

तुम्हारी प्यारी राधाजी हमदेखी ॥ टेक ॥ अंग अंगतेठगईसी डारत जोबन मान बिशेखी । तुमचतुरनते चतुर चतुरयुत बांचत बातअलेखी ॥ जाके काल चलभृकुटिन गत सो सखियनमेंयेखी । गोबिंद भावनी त्रिभुवनस्वामिनी तुम निजकर कहा पेखी ११८

दो० भजनकरै तो श्यामको मननकरै तो श्याम ।
रमनकरै तोश्याममें श्यामहिमें विश्राम११९ ॥

छ० श्रीकृष्णाहिसुखधाम श्यामसुन्दरसबलायक ॥
हूं बिनऊं करजोर जानि जग मंगल दायक ।
पायभक्तियुत कुशल सकल परजन सुखरासै ॥
मोद वृद्धि सब भांति सकल शुभ कृत्य बिलासै ॥
श्याम केलि श्रद्धा सहित पढ़ै सुनै जो जीव ।
सकलकुशलसबकतिसुफलहोयभक्तिगुनसींव १२० ॥

बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥

सबजन अपनोहित कर राखत तुमबिन कौनहम्हें ।

बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥

अबकी बार जो सुध नहीं लेहो तो फिर कौन हम्हें

बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥

फूलत फलत सहर तिनके मन अंकुर भक्त जुम्हें ।

बिहारी जी म्हारी लाज तुम्हें ॥

तुम्होंसदामम सरबस गोबिंदतनमनप्रेमरम्हें ॥

बिहारीजी म्हारी लाज तुम्हें १२१ ॥

क० विदितहो सदीव श्याम करुणाकर मीव नेक विनती अनगिनती गिन दीनर्नहित ठानहो । जगत अपार जीव तारे निज गुण विचार करत ना अवार नेह जाको उर आनहो ॥ ऐसो हरिवान ज्ञान छिन छिन गुण करहुं गान कबहूं हरि कानन सुन अपनो कर मानहो । गोविन्द श्रीमानी सुखदानी जगजीवन के हमहूं पहिंचानें जो हमहूं को जानहो १२२ ॥

अथ गोबिन्दरहस्य गोबिन्दसहायकृत प्रथम रहस्य ॥

स० यज्ञ अवश्यपै शक्ति न आपमें धर्मतने अघभय हरी धायो । ताही समय निज धामते कृष्णहूं मानो हतो तहां द्वारते आयो ॥ शोच विनाशके भीमकूं हासते औगुण चारले मन्दगिनायो । भोज्यप्रशंसक[1] भोजीमहाबढ़[2] नारीमलिन[3] गृहवासहूगायो[4] १२३ भीम सभक्ति संयुक्त चहूं गुण कृष्णहो माहिं दिखाय जना-यो । ऋक्ष सुता बधु[1] सिद्ध बसन[2] भव भोज्य सुपाचक[3] भोजक भायो[4] ॥ भक्ति न कम्पि हँसे पुनि भीमकूं व-न्य महाकृत पुण्य कहायो । नृपहेतु महामख पुण्य लियो गुण गोबिंद के गनको गिन पायो १२४ ॥

कृष्ण कहो अनुकम्पित पापते कम्पित जो सुत

धर्म निहारो। क्षत्री न धर्म सुधर्म समर सो तुम्हारो सुयश नृप सुरन सम्हारो॥ भारी गिनतरगा पापको भारतो धारतहमकर प्रकटपसारो। हर्षित भीमकहो हरि पाप जो आपकोदे बढ़े पाप हमारो १२५ कीजो कृपा तो महामख शुभकृत हमकर अपुन प्रताप सम्हारो। तो तस पुराय समर्पहै आपको होय अक्षय हम पुराय प्रचारो॥ मुदित प्रशंसित भक्ति कहो हरि सुमति वृकोदर दक्ष विचारो। धनधन ते तिन पापन गोबिँद धारत निजकर जन हितधारो १२६॥

निरतत विरत रसातुरी पातुरीरूपरती श्रुति नाद प्रवीनी। सरगम सुरत्रयग्राम अलापन करपगवानी सुरन समकीनी॥ बादसुराटतसाधन भूषणधुनसम्मनके सो भननाभन भीनी। श्याम सुघर छबि निरखो सो योषिता मतगत विगत सरस मन भीनी १२७ गाई जो सोते बनेनी सुघर गत मोहन रूप बिमोही न चीनी। हरि एक चक्री में चारते क्रीड़ित करत चक्रत छत चक्र नवीनी॥ त्रिभुवन कन्दुक हरि बिहरै करु लीला लै सब सो नृप भ्रमदीनी। गोबिँद भूषण दान दै हर्षित कीनबरांगना प्रापनहीनी १२८॥

रुक्मिणी मुदमन वचन प्रशंसित द्रौपदी पंच पतिन प्रतिभाखी। पांच पतिन रतसम नहिं सम्भव है सो त्रियन मत परखी पराखी॥ एकत्रिया हो अनेक पुरुषकर निलज लखेना सो कोन समाखी। सेव्य समाज सकल कहैं द्रौपदी सोर परम व्रत कृष्णाही

साखी १२९ मोपति बिपति बिथित सो तजीपति पंच पतिनपति मोपतिराखी । तुम जो सहस्रन गर्कहरी कहोकसन सपत्नता अमरस चाखी ॥ जावे रमन सो गुमान भरी मन कोई रसरागी कोई अभिलाखी । नारदमुनितेहरी धरेपग पुनिहारीपै लीनेलखीतुमदा-खी ॥ तुमकूं लगे प्रतिबाय अवश्यक तुमही मर्याद की बाटक माखी । ऐसेही गोबिंद बानी बिलासन रानी सहस्रन आनँद लाखी १३० ॥

इति श्यामकेलि समाप्त ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
मार्च सन् १८८९ ई०

